पढ़ने–लिखने की प्रक्रियाओं में बाल डायरी

मंजू नौटियाल

"बाल डायरी यानी बच्चों की स्वयं की डायरी जिसमें वे अपने सुने हुए, सोचे हुए और देखे हुए अनुभवों को लिख सकते हैं, अर्थात वे इसमें लिखने हेतु स्वतंत्र हैं, यहाँ उनपर किसी भी प्रकार की बन्दिशें नहीं हैं और उनके लिखने के मुद्दे उनके घर, गाँव, परिवार, विद्यालय या समाज में मौजूद हैं। बस ज़रूरत उन्हें इस बात का अहसास दिलाने की है कि वे इन तमाम मुद्दों पर लिख सकते हैं। सं.

सीखना-सिखाना निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। हम जब जन्म लेते हैं, तब से कुछ-न-कुछ सीखते रहते हैं। हमें अपने जीवन के अनेकों पड़ावों से गुज़रते हुए बहुत सारी चीज़ें सीखनी होती हैं, जिनमें पढ़ना-लिखना सीखना भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। इसकी तैयारी बचपन से ही प्रारम्भ हो जाती है। शिक्षक, परिवार, विद्यालय और समाज आदि सभी लिखने में बच्चों की मदद कर रहे होते हैं, परन्तु एक शिक्षक के हिस्से यह ज़िम्मेदारी विशेष महत्त्व रखती है। प्रत्येक बच्चा भाषा के रूप में बहुत सारे शब्द और वाक्यों के साथ विद्यालय में आता है। यहाँ शिक्षक उसके शब्दों के संसार को ज्ञान से जोड़ने का प्रयास करता है। शिक्षक के लिए उस समय चुनौती होती है कि वह इस माला को किस तरह पिरोए कि अलग-अलग परिवेश से आए हुए इन बच्चों को एक स्तर पर ला सके, ताकि प्रत्येक बच्चे को उसकी कक्षानुसार सीखने के तय प्रतिफलों तक पहुँचाया जा सके।

मैं अपने विद्यालय में कक्षा 4 और 5 के बच्चों को भाषा पढ़ाती हूँ। इन बच्चों को, पढ़ना-लिखना सिखाते समय मैंने कुछ बातें ग़ौर कीं, जैसे– बच्चों को अगर पढ़ने को बोला जाए तो वे पढ़ तो लेते थे परन्तु उस पढ़े हुए से भाव समझने में उन्हें दिक़्क़तें आती थीं, और ठीक इसी तरह अगर उन्हें लिखने को बोला जाए तो वे बोर्ड या किताब से उतारकर लिख तो लेते थे परन्तु जब उन्हें ख़ुद से सोचकर लिखने को बोला जाए तो वे असहज महसूस करते थे। इन समस्याओं के कारण मेरे बच्चों की पढ़ने-लिखने में रुचि कम थी और वे इससे बचने का प्रयास करते थे। मैं इन समस्याओं के साथ शिक्षण कर ही रही थी कि मुझे माह सितम्बर 2019 में विभागीय पत्र से बुनियादी भाषा शिक्षण पर एक कार्यशाला में प्रतिभाग करने की सूचना मिली और मैंने कार्यशाला में प्रतिभाग किया।

जब मैं कार्यशाला से वापस विद्यालय आई तो मेरे सामने भाषा की मूलभूत दक्षताओं को सिखाने के कई तरीक़े थे, अर्थात दीवार पत्रिका, आज की बात, बाल अख़बार, पढ़ने की घण्टी, चित्रों पर बातचीत, कहानी शिक्षण, कविता शिक्षण, बाल डायरी आदि। इन सबपर विचार करके मैंने सोचा कि बच्चों को ऐसे तरीक़े से सिखाया जाए जिसमें वे स्वतंत्र रूप से पढ़-लिख सकें तो मुझे 'बाल डायरी' का विचार सबसे उम्दा लगा। बाल डायरी यानी बच्चों की स्वयं की डायरी जिसमें वे अपने सुने हुए, देखे हुए और सोचे हुए अनुभवों को लिख सकते हैं, अर्थात इसमें वे लिखने हेतु स्वतंत्र हैं, यहाँ उनपर किसी

भी प्रकार की बन्दिशें नहीं हैं और उनके लिखने के मुद्दे उनके घर, गाँव, परिवार और विद्यालय या समाज में मौजूद हैं। बस ज़रूरत उन्हें इस बात का आइडिया देने की है कि उन्हें क्या लिखना है, कैसे और कब लिखना है, आदि। इस प्रकार बाल डायरी से पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए निम्नानुसार कुछ उद्देश्य तय किए :

- बच्चों को स्वतंत्र लेखन के अवसर देना।
- बच्चों को पढ़ने-लिखने हेतु अलग-अलग प्रकार के मौक़े देना, यानी पाठ्यपुस्तक से हटकर अपने परिवेश में उपलब्ध विभिन्न सन्दर्भों पर लिखना और पढ़ना।
- बच्चों को चित्र, कहानी और कविता बनाने के मौक़े देना।
- विविध समस्याओं को समझते हुए उनपर पत्र लेखन करने का मौक़ा देना।
- यात्रा वृत्तान्त लिखने हेतु प्रेरित करना।
- बच्चों की संयुक्ताक्षर एवं मात्राओं पर समझ बनाते हुए उनके लेखन में सुधार करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मैंने बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने हेतु बाल डायरी के विचार को आज़माने की सोचा और कक्षा 4 व 5 के बच्चों के लिए एक योजना बनाई, जो इस प्रकार थी :

- सभी बच्चे अपनी एक डायरी बनाएँगे और उसमें अपनी-अपनी दिनचर्या लिखेंगे।
- धीरे-धीरे विद्यालय की दिनचर्या भी अपनी-अपनी डायरी में लिखेंगे।
- घर एवं विद्यालय की दिनचर्या साथ-साथ लिखना।
- कहानी, कविता, चित्र और विविध पाठों पर अपने विचार लिखना।
- विविध वस्तुओं की निर्माण प्रक्रिया को लिखवाना और चित्र बनवाना।
- संस्मरण, छुट्टियों का विवरण या यात्रा वृत्तान्त लिखवाना।
- डायरी में स्थानीय समाचार लिखवाना।
- विविध समस्याओं पर पत्र-लेखन करवाना।

इस योजना पर माह सितम्बर से मार्च 2020 तक काम करने का सोचा और बच्चों के साथ निरन्तरता में कुछ गतिविधियाँ करने की कोशिश की गई जिनका विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

पढ़ना–लिखना सिखाने में बाल डायरी सम्बन्धी कुछ प्रक्रियाएँ

आओ लिखें अपनी डायरी : शुरुआती दौर में मैंने बच्चों से कहा कि चलो, हम सब अपनी एक-एक डायरी बनाते हैं जिसमें हम सभी जो कुछ काम दिनभर करेंगे, उसे अपनी दिनचर्या के रूप में डायरी में लिखेंगे। बच्चों को डायरी शब्द पसन्द आया और वे ख़ुशी-ख़ुशी तैयार हो गए, शायद डायरी उनके लिए नई चीज़ थी। बच्चों को पहले समझ नहीं आया कि इसमें क्या और कैसे लिखें। इसके लिए मैंने अपनी दिनचर्या बच्चों को लिखकर दिखाई और बच्चों के साथ पढ़ी। पढ़ने के बाद बच्चों के मन में भी डायरी लिखने का विचार आया और वो अगले ही दिन से डायरी लिखकर लाने लगे। शुरुआत में वे खाने-पीने, सोने, लिखने-पढ़ने और खेलने आदि पर डायरी लिखते। सितम्बर के महीने यही दिनचर्या चलती रही। इससे बच्चे विविध शब्दों जैसे घर, गाँव, डायरी, दिनचर्या, खेलना, कूदना, खाना, पीना, सोना, पढ़ना, लिखना आदि से परिचित हुए और साथ ही इन शब्दों को वे अपनी ज़िन्दगी की गतिविधियों से भी जोड़ रहे थे। शुरुआत में बच्चों के लिखने में बहुत सारी ग़लतियाँ थीं जिन्हें नज़रअन्दाज़ करते हुए उन्हें लिखने हेतु प्रोत्साहित किया गया और साथ ही ग़लत शब्दों को सही तरीक़े से लिखने और पढ़ने का अभ्यास बोर्ड पर करवाया गया।

डायरी में स्कूली गतिविधियाँ : डायरी लेखन को घर तक ही सीमित न रखते हुए स्कूली दिनचर्या के बारे में भी बच्चों को लिखने के लिए प्रेरित किया गया ताकि स्कूल में जो भी कार्य वे करते हैं उसे लिखित रूप दिया जा सके और वे इसे लिख सकें। इस प्रकार बच्चों ने स्कूली दिनचर्या में स्कूल की वे सारी बातें लिखीं जो उन्होंने कीं। जैसे– पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने, खाने-पीने, गप-शप, एक्सरसाइज़, गीत गाना व नाचना आदि। इसमें बच्चों ने छोटी-से-छोटी बातें अर्थात सुबह आकर ताला खोलना, प्रार्थना करना, व्यायाम करना, मध्यान्तर में हाथ धोना, खाना खाना और छुट्टी तक जो भी करते थे, वह सब लिखा। स्कूल में यदि कोई व्यक्ति आता, तो वे उसका वर्णन भी अपनी डायरी में करते थे।

आओ कहानी-कविता सुनें और बनाएँ : बच्चों को बहुत-सी कहानियाँ व कविताएँ हाव-भाव से सुनाई गईं और उसके बाद उनसे उनके पात्रों के बारे में सवाल-जवाब किया जाता, जैसे– क्या कहानी के पात्र ने सही किया? अगर वे उस कहानी के पात्र की जगह होते तो क्या करते? इस प्रकार बच्चे कहानी से जुड़ जाते और आगे उसपर कहानी बनाने लगते। वे जो बात बोल नहीं पाते वह उनकी लेखनी में दिख जाती। इसी प्रकार बच्चों ने विविध शब्दों से कहानियों का निर्माण भी किया। उन्हें बहुत सारे शब्द दिए गए जिनसे शुरुआत में वाक्य बनाने सिखाए गए और उसके बाद इन्हीं वाक्यों के मध्य सम्बन्ध बनाते हुए कहानी बुनना सिखाया गया। इस प्रकार बच्चे ख़ुद से बातें बना-बना कर कहानी बनाने लगे जिसे वे अपनी डायरी में लिखते थे।

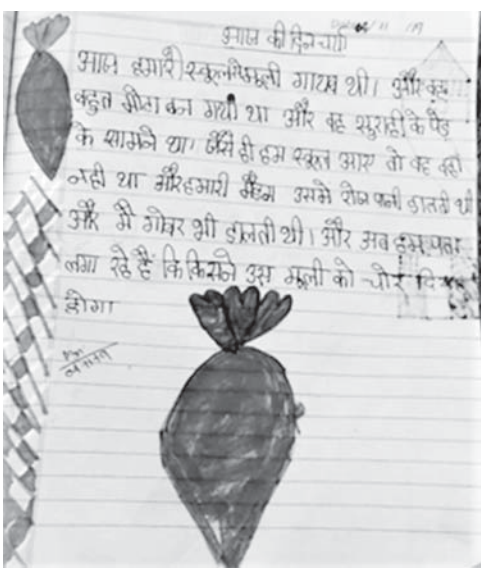

एक दिन मैंने स्कूली दिनचर्या पर एक कविता बनाने को कहा, तो बच्चों ने इसपर कुछ इस तरह कविता बनाई :

प्राथमिक विद्यालय हमारा, है कितना अच्छा

हँसना, गाना, पढ़ना, है कितना अच्छा

अ, आ, इ, ई, क, का, कि, की सीखा सब है,

मैथ्स पढ़ते फटाफट, फटाफट

इंग्लिश पढ़ते How do you do सारे विषय पढ़ते हम,

प्राथमिक विद्यालय तो हमारा, है कितना अच्छा...

इसी तरह बहुत सारे शब्द बच्चों की डायरी से लिए गए और फिर उन्हीं शब्दों के तुकान्त शब्द बच्चों की मदद से बनाए गए जिनपर कविता बनाने के अभ्यास किए गए। नानी, पानी, रानी, धानी पर बच्चों ने तुकबन्दी कुछ इस प्रकार बनाई :

बड़ी सुन्दर है मेरी नानी, धारे से लाती है पानी

साड़ी पहनती है वह धानी, सब कहते हैं उसको रानी

लोककथा, लोकगीत एवं पखाणा लेखन : इसके साथ ही बच्चों को लोककथा, लोकगीत, पखाणा आदि लिखने को प्रेरित किया और उन्होंने अपने दादा-दादी से पूछकर लोककथा, लोकगीत, पखाणा आदि डायरी में लिखे। कुछ मैं उनको स्कूल में सुनाती, जिसे भी वे अपनी डायरी में लिखते, जैसे– मांगल-गीत, चौफला, लोकगीत, प्रार्थना, आदि।

जो घटता हुआ दिखे उसपर लिखवना : माह अक्टूबर के दौरान विद्यालय में किचन गार्डन बन रहा था और स्कूल बिल्डिंग पर पेंट भी हो रहा था, तो बच्चों से इस बारे में लिखने को कहा गया और उन्होंने इन दोनों घटनाओं के बारे में जानकारी जुटाते हुए लिखा। इसमें बच्चों ने, किचन गार्डन क्या होता है, कहाँ बन रहा है, क्यों बना रहा है, कौन-कौन बना रहे हैं, कैसे बना रहे हैं, पेंट क्या होता है, कहाँ से मिलता है, क्यों किया जाता है, पेंट का काम कौन कर रहे हैं, आदि पक्षों को अपनी लेखनी में शामिल किया।

त्योहार, पकवान और मेलों पर लिखवना : बच्चों को इस दौरान आने वाले त्योहारों, उनमें पकने वाले पकवान एवं विद्यालय व स्थानीय स्तर पर होने वाले मेलों के बारे में लिखने के अवसर दिए गए। इसमें बच्चों ने ख़ूब भागीदारी की, जैसे– संकट चौथ पर लिखते हुए उसमें बनाए जाने वाले लड्डू को बनाने की विधि लिखी, स्थानीय स्तर पर होने वाले मंसार मेले के बारे में लिखा, साथ ही बाल शोध मेले में जाकर मेले में क्या हुआ, वहाँ आए हुए विद्यालयों के बारे में, मेले में नई चीज़ क्या सीखी आदि के बारे में भी लिखा।

विविध वस्तुओं की निर्माण प्रक्रिया लिखवाना एवं चित्र बनवाना : विविध वस्तुओं जैसे– मुखौटा, बिग बुक, पेंसिल के छिलकों से आकृति, पेड़-पौधों की निर्माण कला, चित्रों को बनाकर उनपर वाक्य लिखना। बच्चों से कई बेकार वस्तुओं से कुछ भाषा एवं गणित की सहायक सामग्री बनवाई और उसको डायरी में लिखने को कहा, तो बच्चों ने जैसा उन वस्तुओं को बनाया उसका विवरण भी डायरी में लिखा। उन्होंने मुखौटा, बिग बुक, पेंसिल के छिलकों से फूल एवं फल, चीड़ की टहनी से छिपकली आदि बनाने की प्रक्रिया को लिखा। इन चित्रों पर बच्चों ने वाक्य भी बनाए।

अपनी मनपसन्द की चीज़ों के बारे में लिखवना: बच्चों को अपनी मनपसन्द की चीज़ों के बारे में लिखने हेतु प्रेरित किया गया। इसमें उन्होंने मेरा प्यारा बस्ता, फल, फूल, अध्यापिका, दोस्त आदि के बारे में लिखा।

स्थानीय समाचार एवं पत्र लेखन : नवम्बर माह के दौरान बच्चों से कहा गया कि हमारे घर-गाँव में क्या हो रहा है, कौन क्या कर रहा है, खेती-बाड़ी और पशुपालन में क्या हो रहा होगा, बिजली, पानी, सड़क, रास्तों के क्या हाल-चाल हैं, आदि से सम्बन्धित बातों को भी हमें डायरी में लिखना चाहिए। यह आइडिया बच्चों को ठीक लगा और उन्होंने स्थानीय स्तर की छोटी-बड़ी बातों को लिखना शुरू किया। इसमें बहुत सारी स्थानीय समस्याएँ उभरकर आईं जैसे– ख़स्ताहाल सड़क और पानी की समस्या एवं इन्हीं समस्याओं को लेकर बच्चों ने पत्र लेखन किया जिसे बाद में जिला बेसिक शिक्षा एवं उप शिक्षा अधिकारी को भेजा गया। इसी तरह अपने गाँव के मेले में निमंत्रण हेतु अपने दोस्तों व रिश्तेदारों को भी बच्चों ने पत्र लिखे।

संस्मरण, छुट्टियों का ब्योरा एवं यात्रा वृत्तान्त लिखवना : यादों को भी लिखा जा सकता है, इस बात की शुरुआत मैंने बच्चों के साथ अपनी कुछ यादें सुनाकर की। इसे बच्चों ने काफ़ी लगाव से सुना और लिखकर भी दिखाया। इसके बाद बच्चों ने भी अपने भूली-बिसरी बातों को लिखा।

इस बीच जाड़ों की छुट्टियाँ पड़ीं तो बच्चों को कहा गया कि वे जो कुछ करें, उसे डायरी में ज़रूर लिखें, और बच्चों ने वाक़ई में इस बीच भी लिखना जारी रखा, यह काफ़ी सुखद रहा। इन छुट्टियों में वे जहाँ-जहाँ गए वहाँ के यात्रा वृत्तान्त लिखकर लाए। एक बच्चे ने अपनी रूड़की यात्रा के बारे में लिखा।

वर्ण मात्रा एवं व्याकरण की समझ : बच्चों ने अपनी डायरी में उपर्युक्त बहुत सारी बातों को लिखा और इसमें उन्होंने कई नए शब्दों को सीखा व लिखा। इन शब्दों से बच्चों ने अलग-अलग मात्राओं के शब्दों को छाँटा, उन्हें पढ़ा और लिखा भी, इस प्रकार बने शब्दों से शब्द-जाल और शब्द पहेलियाँ भी बन गईं। कुछ शब्दों के विलोम और पर्यायवाची शब्द बनाए गए। डायरी के विवरणों में शामिल शब्दों से वाक्य रचना, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और एकवचन-बहुवचन, आदि से भी बच्चों को परिचित करवाया गया।

बच्चों का आकलन : लिखने में शुद्धता या अशुद्धता तो डायरी में दिख जाती थी। इसपर बच्चों के साथ बोर्ड पर बोलकर लिखने का अभ्यास किया जाता रहा, साथ ही आपसी सहमति से बच्चों से एक दूसरे की डायरी पढ़वाना भी लगातार चलता रहा, जिसमें बच्चे एक दूसरे को मदद करते हैं। आकलन हेतु बच्चों को बीच-बीच में श्रुतलेख, शब्दों से कहानी बनाना, अधूरी कहानी पूरी करना, कहानी-कविता बनाना व सुनाना, अपने अवलोकनों को लिखवाना आदि गतिविधियाँ की गईं। इनके माध्यम से निरन्तर जानने की कोशिश रही कि बच्चे क्या सीख रहे हैं और क्या सीखना अभी बाक़ी है।

कुछ चुनौतियाँ जो काम करते हुए समझ में आईं: बच्चों के साथ बाल डायरी को लेकर काम करते हुए कुछ दिक़्क़तें भी आईं जो इस प्रकार हैं :

- शुरू-शुरू में बच्चे लिखने को तैयार नहीं हुए क्योंकि उन्हें ये समझ में नहीं आ रहा था कि क्या लिखें और कैसे लिखें। यह इसलिए भी हो रहा था क्योंकि उन्हें लिखने का अभ्यास नहीं था।
- **बच्चों के लिखने में अशुद्धता** : बच्चे बहुत ज़्यादा अशुद्ध लिख रहे थे। इससे ऐसा लग रहा था कि अगर कोई इनकी डायरी देखेगा तो बोलेगा कि ये बच्चे कक्षा 4-5 में तो आ गए पर अभी तक शुद्ध लिखना भी नहीं आ रहा है।
- शुरू-शुरू में हर दिन एक जैसा लिखना ही हो पा रहा था जिससे बच्चों में एक क़िस्म का उबाऊपन दिख रहा था।
- डायरी के साथ-साथ पाठ्यक्रम को भी मैनेज करने, उससे सामंजस्य बैठाने में कुछ परेशानियाँ आईं।
- **डायरी के रख-रखाव में बच्चों की उदासीनता**: डायरी फाड़ देना, घर छोड़ देना, कभी लिखना कभी नहीं लिखना, आदि भी दिख रहा था।

इन चुनौतियों के समाधान हेतु शुरुआत मैंने ही की एवं पहले ख़ुद लिखकर दिखाया और धीरे-धीरे बच्चों से लिखवाया। शुरुआत घर की दिनचर्या से की और धीरे-धीरे स्कूली दिनचर्या और उसके बाद पढ़ने-लिखने सम्बन्धी गतिविधियों को डायरी से जोड़ते हुए आगे बढ़े। शुरू में बच्चे अशुद्ध लिखते थे, यहाँ धैर्य रखा और टॉपिक या मुद्दों को बदलते हुए लिखवाते-पढ़वाते गए, इससे उनका रुझान डायरी लेखन में बना रहा।

डायरी लेखन का बच्चों पर असर : डायरी लेखन ने विद्यालय में पढ़ना-लिखना सिखाने की प्रक्रियाओं को एक आधार दिया जिससे बच्चे इन प्रक्रियाओं में मन से शामिल हो पाए। बच्चों के सीखने के स्तर में कुछ बदलाव दिखे, जो इस प्रकार हैं :

- बच्चों में लिखने-पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ी है, इस बात का प्रमाण उनकी डायरियाँ हैं जिसमें उन्होंने अपने लिखने-पढ़ने का अभ्यास किया हुआ है।

- बच्चे पढ़ने-लिखने का उपयोग अब स्थानीय सन्दर्भों में करने लगे हैं, क्योंकि अब उनकी लेखनी में उनका विद्यालय, घर, गाँव, परिवार, स्थानीय मेले, गीत, त्योहार आदि हैं।
- लिखने-पढ़ने में उनके मध्य एक प्रकार का अनुशासन दिखता है जिसमें वे एक दूसरे को सुनते हैं।
- बच्चों में मात्राओं की समझ विकसित हो पाई और वे अब काफ़ी हद तक शुद्ध लिख पा रहे हैं।
- डायरी में बच्चों ने बहुत सारे चित्र भी बनाए हैं और उसमें अपने मनपसन्द रंग भी भरे हैं, इससे उन्हें रंगों का ज्ञान भी अच्छे-से हो पाया है।
- बच्चे अब सुने, देखे हुए और सोचे हुए को लिख पा रहे हैं। जैसे– बच्चों के द्वारा लिखे गए संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त और छुट्टी के ब्योरे, किचन गार्डन और पेंट वाली घटनाओं को लिखना आदि।
- शब्द भण्डार में वृद्धि के साथ-साथ व्याकरण की समझ भी विकसित हो पाई है।
- डायरी लेखन से बच्चों में दिनांक, दिन और समय की समझ अच्छे-से बन पाई है।
- आज बच्चे पत्र लेखन भी कर पा रहे हैं।

मुझे जो समझ में आया : बाल डायरी को लेकर मेरी अब जो समझ बन रही है, वह यह है कि बाल डायरी विद्यालय में पढ़ने-लिखने का माहौल बनाने हेतु एक बेहतर साधन है जिससे बच्चे समझ के साथ पढ़ना और लिखना सीख ही जाते हैं। कुछ और बातें, जिन्हें मैं समझ पाई, इस प्रकार हैं :

- बाल डायरी जीवन पर्यन्त उनके पास एक धरोहर है जिसे वे एक दस्तावेज़ के तौर पर अपने पास रख सकते हैं और अपने बचपन को बड़ी कक्षा में जाकर याद कर सकते हैं।
- बाल डायरी बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों को जानने का एक सशक्त माध्यम है। बच्चे डायरी में अपने घर, परिवार, गाँव, समाज के बारे में अपने विचार लिखते हैं, जिससे एक शिक्षक उनके मन की बात के साथ ही उनके घर-गाँव की परेशानियों को भी समझ सकता है।
- **डायरी अभिभावकों से जुड़ने का माध्यम हो सकती है :** मेरे वॉट्सएप स्टेटस को कुछ अभिभावकों ने देखा जिसमें मैंने बच्चों की डायरी के कुछ अंश डाले हुए थे, इससे वे बच्चों की पढ़ाई के बारे में जानने लगे हैं और अब स्कूल आकर ख़ुद सम्पर्क स्थापित करने लगे हैं।
- **बच्चों के स्वतंत्र लेखन हेतु बाल डायरी एक प्रेरणा है :** मैंने बच्चों से कहा कि अगर तुम्हें मेरा पढ़ाया हुआ कहीं पर समझ में न आए तो उसे भी डायरी में लिख सकते हो, और बच्चों ने इस बारे में भी बेझिझक होकर लिखा। इससे मुझे अपने पढ़ाने के तरीक़ों पर सोचने का मौक़ा मिला और कोशिश कर पाई कि उनके अनुरूप अच्छे-से समझा सकूँ।

मंजू नौटियाल 23 वर्षों से प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षण कर रही हैं। वे पौड़ी जनपद के दूरस्थ क्षेत्र में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय सरासू में प्रधानाध्यापिका हैं। उन्हें बच्चों के साथ चर्चाएँ करना, खेलना और डायरी लिखना पसन्द है।

सम्पर्क : manjunautiyal100@gmail.com